भगवान महावीर के जीवन पर प्रकाश:

भगवान महावीर जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे। उनका जीवन मानवता, त्याग और आत्मसंयम का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करता है।

जन्म और प्रारंभिक जीवन

भगवान महावीर का जन्म ईसा पूर्व 599 में वैशाली के निकट कुंडग्राम (वर्तमान बिहार) में हुआ था। उनके पिता का नाम सिद्धार्थ और माता का नाम त्रिशला था। वे लिच्छवि गणराज्य के क्षत्रिय वंश से संबंधित थे। बचपन से ही वे धैर्यवान, विवेकी और करुणाशील थे।

संन्यास और तपस्या

30 वर्ष की आयु में उन्होंने संसार का त्याग कर संन्यास ग्रहण किया। उन्होंने 12 वर्ष तक कठोर तपस्या और ध्यान किया। इस दौरान वे अनेक कष्टों को सहते हुए भी अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय और ब्रह्मचर्य के मार्ग पर अडिग रहे।

कैवल्य ज्ञान (ज्ञान की प्राप्ति)

12 वर्ष की साधना के बाद उन्हें कैवल्य ज्ञान (पूर्ण ज्ञान) की प्राप्ति हुई और वे केवलज्ञानी कहलाए। इसके बाद उन्होंने जनसाधारण को मोक्ष और अहिंसा का मार्ग बताया।

उपदेश और धर्म प्रचार

महावीर स्वामी ने लोगों को सिखाया कि आत्मा शाश्वत है और उसके बंधन का कारण कर्म है। उन्होंने कर्मबंधन से मुक्ति पाने के लिए पंचमहाव्रत (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) का उपदेश दिया।
उनकी शिक्षाओं ने समाज में समानता, नैतिकता और करुणा की भावना को जन्म दिया।

परिनिर्वाण

भगवान महावीर का परिनिर्वाण ईसा पूर्व 527 में पावापुरी (बिहार) में हुआ। यह दिन जैन परंपरा में दीपावली के रूप में मनाया जाता है।

निष्कर्ष

भगवान महावीर का जीवन त्याग, तप, आत्मसंयम और करुणा की प्रतीक कथा है। उन्होंने अहिंसा और सत्य के बल पर जीवन का उच्चतम आदर्श प्रस्तुत किया, जो आज भी मानव समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है।